सोम प्रदोष व्रत कथा (Som Prodosh Vrat Katha)

Som Prodosh Vrat Kath: सोम प्रदोष व्रत की कथा हिन्दू धर्म में बहुत महत्वपूर्ण है। यह व्रत हर पक्ष के त्रयोदशी (13वें दिन) को किया जाता है। इस व्रत की कथा में एक ब्राह्मण महिला का उल्लेख है जिसका पति स्वर्गवासी हो चुका था, और उसके पास अपने और अपने पुत्र का पालन-पोषण करने का कोई साधन नहीं था। एक दिन, वह भिक्षा के लिए घर लौटती हुई, एक घायल राजकुमार को मिलती है, जिसे वह अपने घर ले जाती है और उसकी देखभाल करती है। यह राजकुमार विदर्भ का था, जिसके पिता को दुश्मनों ने कैद कर लिया था। राजकुमार ने ब्राह्मण महिला और उसके पुत्र के साथ रहना शुरू कर दिया। एक दिन, गन्धर्व राजकुमारी अंशुमति ने उसे देखा और वह उससे प्यार करने लगी। अंशुमति के माता-पिता ने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से करने का निर्णय किया। इस विवाह के बाद, राजकुमार ने गन्धर्व सेना की सहायता से अपने दुश्मनों को पराजित किया और अपनी राजधानी वापस प्राप्त की। उसने ब्राह्मण महिला के पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया। यह कथा प्रदोष व्रत के महत्व को उजागर करती है। यह व्रत ब्राह्मण महिला और उसके पुत्र को गरीबी से बाहर निकालने में सहायता करता है, और राजकुमार को उसकी राजधानी वापस प्राप्त करने में मदद करता है। व्रत के पालन करने वाले भक्तों की सभी इच्छाओं की पूर्ति होती है। सोम प्रदोष के दिन व्रत का विशेष महत्व होता है। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से भक्तों की सभी इच्छाएं पूरी होती हैं |

www.janbhakti.in

janbhakti.in